



Study AV Kand 10 Hindi

अथर्ववेद 10.2.1

केन पाष्णी आभृते पूरुषस्य केन मांसं संभृतं केन गुल्फौ ।
केनाङ्गुलीः पेशनीः केन खानि केनोच्छलङ्खौ मध्यतः कः प्रतिष्ठाम् ॥१॥

(केन) कौन, कैसे, क्यों, सर्वोच्च स्वामी (पाष्णी) एड़ियाँ (आभृते) रूप बनाता है (पूरुषस्य) मनुष्यों के (केन) कौन, कैसे, क्यों, सर्वोच्च स्वामी (मांसम्) मांस (संभृतम्) संयुक्त किये (केन) कौन, कैसे, क्यों, सर्वोच्च स्वामी (गुल्फौ) टखने (केन) कौन, कैसे, क्यों, सर्वोच्च स्वामी (अङ्गुलीः) अंगुलियाँ (पेशनीः) फुर्तीली और सुन्दर (केन) कौन, कैसे, क्यों, सर्वोच्च स्वामी (खानि) इन्द्रियों की मोरियाँ, गोलक, छिद्र (केन) कौन, कैसे, क्यों, सर्वोच्च स्वामी (उच्छलङ्खौ) पैरों के तलवे (मध्यतः) मध्य में (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (प्रतिष्ठाम्) स्थापित करता है ।

नोट :- 'कः' का अर्थ कौन, कैसे, क्यों होता है और सर्वोच्च स्वामी भी होता है। अतः इस मन्त्र के सभी प्रश्नों का उत्तर 'कः' के दूसरे अर्थ में निहित है ।

व्याख्या :-

मानव शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों को किसने, कैसे और क्यों शक्तियाँ प्रदान की? किसने मनुष्यों की एड़ियों को रूप प्रदान किया; किसने मांस को संयुक्त किया (शरीर के साथ); किसने टखनों को स्थापित किया; किसने फुर्तीली और सुन्दर अंगुलियों का सुन्दर निर्माण किया; किसने इन्द्रियों के छिद्र अर्थात् गोलक स्थापित किये; किसने पैरों के तलवों का निर्माण किया; और कौन मध्य में स्थापित हो गया। सर्वोच्च स्वामी मध्य में स्थापित हुआ ।

जीवन में सार्थकर्ता :-

मननशील मनुष्य सृष्टि के बारे में प्रश्न क्यों करते हैं?

इस सूक्त का उद्देश्य सभी लोगों को इस बात के लिए प्रेरित करना है कि वे इसकी छानबीन करें कि इस सारे शरीर की सुन्दर रचना, इसके सभी तन्त्रों और अंगों को इस प्रकार जोड़ना कि हम सुविधा पूर्वक कार्य कर सकें और जीवन यापन कर सकें। सृष्टि निर्माण के समय से ही मननशील मनुष्य इस प्रकार के प्रश्न करते रहे हैं। प्राचीन ऋषियों ने भी ऐसे प्रश्न किये जिनके बदले में उन्हें वेद प्राप्त हुए। आज भी ध्यान अवस्था में मनुष्य ऐसे ही प्रश्न करते हैं तो उन्हें परमात्मा के साथ सम्पर्क के रूप में उत्तर प्राप्त होता है ।

अथर्ववेद 10.2.2

कस्मान्नु गुल्फावधराव कृण्वन्नष्टीवन्तावुत्तरौ पूरुषस्य ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जङ्घे निर्ऋत्य न्य दधुः क्व स्विज्जानुनोः सन्धी क उ तच्चिकेत ॥2॥

(कस्मात्) किस पदार्थ से, किस उद्देश्य से (नु) अब (गुल्फौ) टखने (अधरौ) नीचे की तरफ (कृण्वन्) बनाये (अष्टीवन्तौ) घुटने (उत्तरौ) ऊपर (पूरुषस्य) मनुष्यों के (जङ्घे) जंघाएं (निर्ऋत्य) पृथक (नि अदधुः) साथ-साथ (क्व स्वित्) किसके अन्दर (जानुनोः) दोनों के (घुटनो) के (सन्धी) जोड़ (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (उ) निश्चित रूप से (तत्) उसको (चिकेत) जानता है।

व्याख्या :-

पैरों के जोड़ों की व्यवस्था के बारे में कौन जानता है?

किस पदार्थ से और किस उद्देश्य से अब यह दोनों टखने नीचे की तरफ बनाये गये और घुटने ऊपर की तरफ बनाये गये; जंघाएं सदैव अलग-अलग और इकट्ठी; घुटनों के दोनों जोड़ किसके अन्दर स्थापित किये गये। कौन इन सबके बारे में जानता है। सर्वोच्च स्वामी इन सबके बारे में जानता है।

अथर्ववेद 10.2.3

चतुष्टयं युज्यते संहितान्तं जानुभ्यामूर्ध्वं शिथिरं कबन्धम्।
श्रोणी यदूरु क उ तज्जजान याभ्यां कुसिन्धं सुदृढं बभूव ॥3॥

(चतुष्टयम्) चार (युज्यते) संयुक्त करता है (संहितान्तम्) बन्द किनारों के साथ (जानुभ्याम्) घुटने (उर्ध्वम्) ऊपर (शिथिरम्) लचीले (कबन्धम्) धड़ (श्रोणी) कुल्हा (यत्) जो (उरु) ऊपर (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (उ) निश्चित रूप से (तत्) उसको (जजान) उत्पन्न करता है (याभ्याम्) किसके द्वारा (कुसिन्धम्) शरीर की बारीक नसों (सुदृढम्) दृढ़ (बभूव) हो गई।

व्याख्या :-

किसने घुटनों को लचीले धड़ के साथ जोड़ दिया और बारीक नसों को सुदृढ़ बनाया?

चारों (दो पैर और दो बाहों) को किसने बन्द किनारों के साथ और लचीली धड़ के साथ जोड़ा और कुल्हों और जंघाओं को घुटनों के ऊपर जोड़ा।

किसने उसे पैदा किया जिसके द्वारा बारीक नसों वाला शरीर सुदृढ़ हो पाया।

सर्वोच्च स्वामी ने निश्चित रूप से उसे पैदा किया जिसके द्वारा बारीक नसों वाला शरीर सुदृढ़ हो पाया।

अथर्ववेद 10.2.4

कति देवाः कतमे त आसन्य उरो ग्रीवाश्चिक्युः पूरुषस्य।
कति स्तनौ व्य दधुः कः कफोडौ कति स्कन्धान्कति पृष्टीरचिन्वन् ॥4॥

(कति) कितनी (देवाः) दिव्य शक्तियाँ (कतमे) कौन (ते) वे (आसन्य) थे (ये) जो (उरः) छाती (ग्रीवाः) गला (चिक्युः) संयुक्त करते, जुड़ते (पूरुषस्य) मनुष्यों के (कति) कितनों ने (स्तनौ) दोनों स्तन (वि

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अदधुः) विशेष रूप से बनाये, रूप दिया (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (कफोडौ) गाल (कति) कितनों ने (स्कन्धान) कन्धे (कति) कितनों ने (पृष्ठीः) समस्त हड्डियाँ (अचिन्वन्) इकट्ठी की, जोड़ी।

व्याख्या :-

किसने हड्डियों को इकट्ठा किया और शरीर के सुन्दर अंगों को रूप दिया? कितनी थी वे दिव्य शक्तियाँ और कौन थी जिन्होंने मनुष्य की छाती के ऊपर गले को जोड़ा; कितनों ने विशेष रूप से दोनों स्तनों को विशेष से बनाया और रूप दिया; किसने गालों और कुहनियों को बनाया; कितनों ने कंधों को बनाया; कितनों ने सभी हड्डियों को इकट्ठा किया और उनका प्रबन्ध किया। इसका उत्तर है – सर्वोच्च स्वामी ने अपनी असीम शक्तियों के द्वारा यह सब कार्य किये।

अथर्ववेद 10.2.5

को अस्य बाहू समभरद्वीर्यं करवादिति ।
अंसौ को अस्य तद देवः कुसिन्धे अध्या दधौ ॥ 5 ॥

(कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्य) इसका (मनुष्यों का) (बाहू) भुजाएँ (सम अभरत) समुचित रूप से शक्तियाँ दी (वीर्यम्) वीरतापूर्ण कार्य (करवातु) करता है (इति) इस प्रकार (अंसौ) दोनों कंधे (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्य) इसका (तत्) वह (बहादुरीपूर्ण कार्य) (देवः) दिव्य (सर्वोच्च) (कुसिन्धे) शरीर (अधि) से सम्बन्धित (आ दधौ) समुचित रूप से स्थापित।

व्याख्या :-

किसने भुजाएँ दी और कंधे स्थिर किये?

किसने इस मनुष्य की भुजाओं को समुचित रूप से शक्तिशाली बनाया जिससे वह बहादुरी पूर्ण कार्य कर सके। कौन वह सर्वोच्च दिव्य है जिसने दोनों कंधों को समुचित प्रकार से स्थिर बनाया जिससे शरीर से सम्बन्धित बहादुरीपूर्ण और जिम्मेदारी के कार्य किये जा सकें। इसका उत्तर है – सर्वोच्च स्वामी।

अथर्ववेद 10.2.6

कः सप्त खानि वि ततर्द शीर्षणि कर्णाविमौ नासिके चक्षणी मुखम् ।
येषां पुरुत्रा विजयस्य महानि चतुष्पादो द्विपदो यन्ति यामम् ॥ 6 ॥

(कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (सप्त) सात (खानि) छिद्र, इन्द्रियों के द्वार, गोलक (वि ततर्द) खोदे गये (शीर्षणि) सबसे ऊपर, सिर में (कर्णौ इमौ) ये दो कान (नासिके) नाक (चक्षणी) दोनों आंखें (मुखम्) मुख (येषाम्) इसके द्वारा (पुरुत्रा) अनेक प्रकार से (विजयस्य) विजय (महानि) इसकी शक्तियों और



कार्यों की महानता (चतुष्पादः) चार पैरों वाले (द्विपदः) दो पैरों वाले (यन्त्रि) गति करते हैं (यामम्) मार्ग पर।

व्याख्या :-

हम अपने जीवन में किस प्रकार गति कर सकते हैं?

किसने हमारे शिखर पर अर्थात् सिर पर सात छिद्र या इन्द्रियों के द्वार बनाये – दो कान, दो नासिका, दो आंखें और एक मुख, इसकी शक्तियों और कार्यों की महानता की विजय के बल पर, चार पैरों वाले और दो पैरों वाले अपने मार्ग पर गति करते हैं। इसका उत्तर है – सर्वोच्च स्वामी।

जीवन में सार्थकर्ता :-

अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने का क्या महत्त्व है?

यह मन्त्र हमें प्रेरित करता है कि हम अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करें या उनका नियंत्रण रखें, केवल तभी इन इन्द्रियों की महानता हमें अपने जीवन पथ पर समुचित रूप से गति के योग्य बनायेगी। यदि हम अपनी इन्द्रियों को अपने ऊपर शासन करने की अनुमति दे दें तो हमारा जीवन एक बोझ बन जायेगा।

अथर्ववेद 10.2.7

हन्वोर्हि जिह्वामदधात्पुरुचीमधा महीमधि शिश्राय वाचम्।
स आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तरपो वसानः क उ तच्चिकेत॥७॥

(हन्वोः) जबड़ों के मध्य में (हि) केवल (जिह्वाम्) जीभ (अदधात्) धारण की, स्थापित की (पुरुचीम्) बहुमुखी (अध) और फिर (महीम्) महान् प्रभावशाली (अधि शिश्राय) पूरी तरह से प्रदान किये (वाचम्) वाणी के साथ (सः) वह (आ वरी वर्ति) मोड़ देता है (भुवनेषु) सभी आवास (अन्तः) अन्दर (अपः) आकाश (वसानः) आवरण करते हुए, व्याप्त करते हुए (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (उ) निश्चित रूप से (तत्) वह (चिकेत) जानता है।

व्याख्या :-

जीभ के क्या लक्षण हैं?

दोनों जबड़ों के बीच में बहुमुखी जीभ को धारण किया, स्थापित किया और फिर उसमें महान् और प्रभावशाली वाणी को प्रदान किया।

दूसरी तरफ, वह दाता आकाश में सभी शरीरों के बीच स्वयं विद्यमान है, सबका आवरण कर देता है और सबमें व्याप्त हो जाता है।

कौन निश्चित रूप से उसको जानता है।

सर्वोच्च स्वामी निश्चित रूप से उसको जानता है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

आध्यात्मिक मार्ग पर जीभ की शक्ति का आनन्द कैसे लिया जाये?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हमारी जीभ बहुमुखी है। परमात्मा ने इसे महान् और प्रभावशाली उद्देश्यों के लिए दिया है। अतः इसका प्रयोग निरर्थक कार्यों के लिए नहीं करना चाहिए। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वाणी शक्ति का देवता अग्नि अर्थात् ऊर्जा है जिसे दिव्य उद्देश्यों के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। परमात्मा हर तरफ विद्यमान है, सबका आवरण है और सर्वत्र व्याप्त है। हमें अपने जीवन में मौन रहकर और अपनी इन्द्रियों के निरर्थक या आवश्यकता से अधिक प्रयोग से बचे रहकर परमात्मा की सर्वोच्चता का आनन्द लेना चाहिए।

अथर्ववेद 10.2.8

मस्तिष्कमस्य यतमो ललाटं ककाटिकां प्रथमो यः कपालम्।
चित्वा चित्यं हन्वोः पूरुषस्य दिवं रुरोह कतमः स देवः॥८॥

(मस्तिष्कम्) मस्तिष्क (अस्य) यह (यतमः) किसने (ललाटम्) मस्तक को (ककाटिकाम्) सिर के पिछले भाग को (प्रथमः) सर्वप्रथम (यः) जो है (कपालम्) खोपड़ी को (चित्वा) बनाते हुए (चित्यम्) ढेर को (हन्वोः) दोनों जबड़ों का (पूरुषस्य) मनुष्य का (दिवम्) प्रकाश को (रुरोह) खड़ा होता है (कतमः) कौन है (सः) वह (देवः) दिव्य।

व्याख्या :-

परमात्मा हमारे शरीर में किस जगह उदित होते हैं?

सबमें प्रथम, जिसने मस्तक को, सिर के पिछले भाग को और खोपड़ी को मस्तिष्क दिया है और कौन मानव शरीर के दोनों जबड़ों का ढेर बनाता है और स्वयं दिव्य प्रकाश तक उदय होता है। कौन है वह, सर्वोच्च दिव्य।

जीवन में सार्थकर्ता :-

तन्त्रिका तन्त्र के द्वारा परमात्मा की सर्वोच्चता का आनन्द कैसे लें?

सर्वोच्च दिव्य परमात्मा ने मस्तिष्क में और खोपड़ी के निकट सभी अंगों को लगाकर एक चमत्कारिक तन्त्र का प्रबन्ध किया है जिससे मनुष्य मननशील हो सके। उसने इस तन्त्रिका तंत्र के सर्वोच्च स्थान पर दिव्य प्रकाश में अपना स्थान निर्धारित किया है।

अथर्ववेद 10.2.9

प्रियाप्रियाणि बहुला स्वप्नं संबाधतन्द्रयः।
आनन्दानुग्रो नन्दांश्च कस्माद्वहति पूरुषः॥९॥

(प्रिय अप्रियाणि) प्रिय और अप्रिय (बहुला) अनेकों (स्वप्नम्) स्वप्न (संबाधतन्द्रयः) पीड़ित करने वाले, थकाने वाले (आनन्दात्) आनन्द (उग्रः) दुर्जेय, शानदार (नन्दान्) मौज मस्ती (च) और (कस्मात्) किससे, किस कारण (वहति) लाता है, प्राप्त करता है (पूरुषः) सर्वोच्च पुरुष, मनुष्य।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

जीवन में भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का क्या कारण है?

दुर्जेय और शानदार सर्वोच्च पुरुष कहाँ से और किस कारण से प्रिय और अप्रिय, पीड़ित करने वाली, थकाने वाली, आनन्ददायक और मौज मस्ती वाली अवस्थाओं को लाता और प्राप्त करवाता है।

दूसरा अर्थ :- दुर्जेय और शानदार मनुष्य कहाँ से और किस कारण से प्रिय और अप्रिय, पीड़ित करने वाली, थकाने वाली, आनन्ददायक और मौज मस्ती वाली अवस्थाओं को लाता और प्राप्त करवाता है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हम भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में परमात्मा का आह्वान क्यों करते हैं?

हमारे जीवन में भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ उत्पन्न होती रहती हैं। इस मन्त्र में हम अपने जीवन के लिए 'ब्रह्म प्रकाश' देवता का आह्वान करते हैं अर्थात् परमात्मा के प्रकाश या परमात्मा की व्यवस्था का। इसका अभिप्राय है कि परमात्मा स्वयं ही सभी परिस्थितियों का प्रत्यक्ष कारण है। इसीलिए हम इन द्वन्दों में संतुलन बनाये रखने के लिए उसका आह्वान करते हैं। परमात्मा की सर्वोच्चता के बारे में चेतना हमारे मन को भय या आनन्द के स्थान पर एक संतुलन बनाने में सहायता करती है। हमारे अन्दर केवल परमात्मा की उपस्थिति ही हमें दुर्जेय बनाती है। इसलिए हमें परमात्मा की उपस्थिति के प्रति चेतन रहना चाहिए।

अथर्ववेद 10.2.10

आर्तिरवतिर्निऋतिः कुतो नु पुरुषेऽमतिः।
राद्धिः समृद्धिरव्युद्धिर्मतिरुदितयः कुतः॥10॥

(आर्तिः) दर्द (अवतिः) गरीबी (निऋतिः) विपदा (कुतः) कहाँ से, किस कारण से (नु) अब (पुरुषे) मनुष्यों में (अमतिः) मूर्खता (राद्धिः) उपलब्धि (समृद्धिः) समृद्धि (अव्युद्धिः) पूर्णता, संघर्ष और विपत्तियों में सफलता (मतिः) बुद्धि और विवेक (उदितयः) उदय और प्रगति (कुतः) कहाँ से, किस कारण।

व्याख्या :-

मनुष्यों में कौन-कौन से मानसिक उतार-चढ़ाव हैं?

कहाँ से और किस कारण से अब मनुष्यों के बीच हैं — 1. दर्द, 2. गरीबी, 3. आपदाएँ, और 4. मूर्खताएँ।

कहाँ से और किस कारण से इन परिस्थितियों का उदय और प्रगति प्राप्त होती है — 1. उपलब्धियाँ, 2. समृद्धि, 3. पूर्णता, संघर्षों में सफलता तथा 4. बुद्धि और विवेक।

जीवन में सार्थकर्ता :-

सभी उतार-चढ़ावों में संतुलन कैसे बनाकर रखा जाये?

मनुष्यों के शारीरिक या मानसिक स्तरों पर, व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से सामाजिक, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, सभी उतार-चढ़ाव केवल परमात्मा के साथ सम्बद्धता या असम्बद्धता के कारण

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हैं अर्थात् चारों तरफ प्रत्येक कण और प्रत्येक अवस्था के पीछे सर्वोच्च शक्ति की अनुभूति का होना या न होना; उस सम्बद्धता या अनुभूति के मार्ग का ज्ञान या अज्ञानता। इससे भी महत्वपूर्ण है कि वर्तमान अज्ञानता के अन्धकारमय युग में प्रत्येक मनुष्य के लिए उस वास्तविक शक्ति को जानने और प्रेम करने की इच्छा और प्रयास का होना, जो आध्यात्मिक स्तर पर एक स्थाई आनन्द का निर्माण करेगा जिसमें शारीरिक और मानसिक स्तर के सुखों या दुःखों के साथ कोई परिवर्तन नहीं होगा।

अथर्ववेद 10.2.11

को अस्मिन्नापो व्य दधाद्विषूतः पुरुवृतः सिन्धुसृत्याय जाताः।
तीव्रा अरुणा लोहिनीस्ताम्रधूम्रा ऊर्ध्वा अवाचीः पुरुषे तिरश्चीः॥11॥

(कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्मिन्) इसमें (आपः) तरल (रक्त रूप) (वि अदधात्) विशेष रूप से धारण करता है, देता है (विषूतः) अनेक प्रकार से गति करते हुए (पुरुवृतः) प्रचुरता में गति करते हुए (सिन्धु सृत्याय) नदी की तरह बहते हुए (जाताः) उत्पन्न (तीव्राः) तीव्र गति करते हुए (अरुणाः) लालीपूर्ण (लोहिनीः) गाढ़े रंग वाला लोहा (ताम्र धूम्राः) तांबे वाला लाल (ऊर्ध्वाः) ऊपर की तरफ (अवाचीः) नीचे की तरफ (पुरुषे) मनुष्य में (तिरश्चीः) तिरछा।

व्याख्या :-

हमारे शरीर में रक्त की गति अद्भुत कैसे है?

कौन इस मानव शरीर में तरल (रक्त रूप) को उत्पन्न करता है और विशेष रूप से हमारे अन्दर धारण करता है या देता है जो नदी की तरह बहते हुए भिन्न-भिन्न प्रकार से और प्रचुरता में गति करता है, लाली से भरपूर, गाढ़ा लाल तथा तांबे वाले लाल रंग में ऊपर की ओर, नीचे की ओर तथा तिरछी दिशा में तीव्रता के साथ गति करता है। सर्वोच्च स्वामी ने यह सब किया है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

परमात्मा के प्रति चेतना के द्वारा परमात्मा की अनुभूति कैसे करें?

यह मन्त्र हमारे शरीर में तरल अर्थात् रक्त की अद्भुत गतियों के बारे में एक प्रश्न प्रस्तुत करता है जिसका उत्तर उसी में निहित है। रक्त की एक-एक बूंद की गति के साथ हमें सर्वोच्च स्वामी, हमारे पिता और क्रियात्मक रूप से एक वास्तविक मित्र की सर्वोच्चता के बारे में चेतन रहना चाहिए।

अथर्ववेद 10.2.12

को अस्मिन्नूपमदधात्को मह्यानं च नाम च।
गातुं को अस्मिन्कः केतुं कश्चरित्राणि पूरुषे॥12॥

(कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्मिन्) इसमें (रूपम्) रूप (अदधात्) धारण करता है, देता है (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (मह्यानम्) महत्त्व, महिमा (च) और (नाम) नाम, प्रसिद्धि (च) और (गातुम्) गति (कः)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्मिन्) इसमें (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (केतुम्) ज्ञान, चेतना (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (चरित्राणि) चरित्र, व्यवहार (पुरुषे) मनुष्यों में।

व्याख्या :-

मनुष्यों को नाम, रूप और मन किसने दिया है?

मनुष्य शरीर में रूप को किसने स्थापित या प्रदान किया है; किसने मनुष्यों को महत्त्व और महिमा दी है; किसने नाम और प्रसिद्धि दी है; किसने गतिशीलता दी है; किसने ज्ञान और चेतना दी है; और किसने चरित्र तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यवहार स्थापित किये हैं। इन सबका उत्तर है सर्वोच्च स्वामी।

जीवन में सार्थकर्ता :-

परमात्मा की सर्वोच्चता के साथ चेतना पूर्वक किस प्रकार जियें?

हमारे शारीरिक और मानसिक अस्तित्व तथा हमारा नाम, जो देखने में माता-पिता द्वारा प्रदत्त लगता है वह सब मनुष्य जीवन को परमात्मा के द्वारा दिया गया है, क्योंकि हर घटना पूर्व निर्धारित होती है। यदि हम इसमें विश्वास कर लें तो केवल तभी हम यह अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं कि यही एक मात्र वास्तविकता है और तभी हम परमात्मा के साथ जुड़कर रह सकते हैं। हमारे जीवन की प्रत्येक गतिविधि और हमारे मन का प्रत्येक विचार परमात्मा की सर्वोच्चता की चेतना के साथ भरपूर रहना चाहिए। केवल ऐसा जीवन ही स्थाई शांति सुनिश्चित कर सकता है।

अथर्ववेद 10.2.13

को अस्मिन्प्राणमवयत्को अपानं व्यानमु।
समानमस्मिन्को देवोऽधि शिश्राय पुरुषे ॥13॥

(कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्मिन्) इसमें (प्राणम्) अत्यावश्यक वायु, अन्दर जाती हुई (अवयत्) बुनती है (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अपानम्) नीचे जाती हुई वायु, बाहर जाती हुई (व्यानम्) सारे शरीर में व्याप्त वायु (उ) और (समानम्) मध्य वायु, पाचन तन्त्र के लिए (अस्मिन्) इसमें (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (देवः) दिव्य (अधि शिश्राय) पूरी तरह स्थापित करता है (पुरुषे) मनुष्यों में।

व्याख्या :-

मनुष्य शरीर में वायु के भिन्न-भिन्न आयाम किसने बुने हैं और स्थापित किये हैं?

किसने बुने हैं :- 1. प्राणम् अर्थात् अत्यावश्यक वायु, अन्दर जाती हुई, 2. अपानम् अर्थात् नीचे जाती हुई वायु, बाहर जाती हुई, 3. व्यानम् अर्थात् सारे शरीर में व्याप्त वायु, 4. समानम् अर्थात् मध्य वायु, पाचन तन्त्र के लिए।

वह दिव्य सर्वोच्च कौन है जिसने मनुष्य शरीर में इन सबको पूरी तरह से स्थापित किया है? वह सर्वोच्च स्वामी ही सर्वोच्च दिव्य शक्ति है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



शरीर में श्वासों और तरंगों के साथ ध्यान—साधना या योग निद्रा कैसे की जाये?

यह मन्त्र हमें प्रेरित करता है कि हम प्रत्येक श्वास और शरीर के प्रत्येक भाग में व्याप्त वायु पर ब्रह्म की स्थापना और उसकी छाप को महसूस करें।

यह मन्त्र अन्दर आती हुई और बाहर जाती हुई श्वास पर ध्यान लगाकर और इसी श्वास के कारण शरीर के किसी भी अंग में पैदा होने वाली तरंगों पर ध्यान लगाकर ध्यान—साधना और योग निद्रा के अभ्यास किये जा सकते हैं जिससे इस श्वास के देने वाले की सर्वोच्चता की अनुभूति हो सके।

सूक्ति :- (कः अस्मिन् प्राणम् अवयत् कः अपानम् व्यानम् उ समानम् — अथर्ववेद 10.2.13) किसने बुने हैं :- 1. प्राणम् अर्थात् अत्यावश्यक वायु, अन्दर जाती हुई, 2. अपानम् अर्थात् नीचे जाती हुई वायु, बाहर जाती हुई, 3. व्यानम् अर्थात् सारे शरीर में व्याप्त वायु, 4. समानम् अर्थात् मध्य वायु, पाचन तन्त्र के लिए।

अथर्ववेद 10.2.14

को अस्मिन्यज्ञमदधादेको देवोऽधि पूरुषे।
को अस्मिन्सत्यं कोऽनृतं कुतो मृत्युः कुतोऽमृतम्॥14॥

(कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्मिन्) इसमें (यज्ञम्) यज्ञ, त्याग कार्य (दधात्) स्थापित किये (एकः) एक (देवः) दिव्य (अधि) सम्बन्धित (पूरुषे) मनुष्यों से (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्मिन्) इसमें (सत्यम्) सत्य, वास्तविकता (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अनृतम्) असत्य, अवास्तविकता (कुतः) कहाँ से (किस कारण से) (मृत्युः) मृत्यु (कुतः) कहाँ से (किस कारण से) (अमृतम्) अमृत अवस्था, मुक्ति।

व्याख्या :-

किसने मनुष्यों में यज्ञ कार्यों को स्थापित किया?

किसने मनुष्य में सत्य और असत्य को स्थापित किया?

किसने मनुष्य में मृत्यु और मुक्ति को स्थापित किया?

कौन है वो दिव्य सर्वोच्च जिसने मनुष्यों में यज्ञ कार्यों को स्थापित किया; किसने सत्य अर्थात् वास्तविकता और असत्य अर्थात् अवास्तविकता को स्थापित किया; कहाँ से (किस कारण से) मृत्यु आती है और कहाँ से (किस कारण से) अमृत अवस्था अर्थात् मुक्ति आती है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

यज्ञ कार्यों का क्या महत्त्व है?

सर्वोच्च दिव्य शक्ति ने मनुष्यों के बीच यज्ञ कार्यों को स्थापित किया है। जो लोग समग्र रूप से यज्ञ के मार्ग का अनुसरण करते हैं अर्थात् दिव्य पूजा, दिव्य संगतिकरण और दिव्य सहयोग या त्याग, स्वाभाविक रूप से और निश्चित रूप से अहंकार और इच्छाओं के बिना, ऐसे लोग सत्य या वास्तविकता अर्थात् परमात्मा की अनुभूति की तरफ अग्रसर होते हैं और अन्ततः मुक्ति के स्तर को प्राप्त कर लेते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जो लोग यज्ञ मार्ग का अनुसरण नहीं करते या अहंकार और इच्छाओं के साथ यज्ञ करते हैं, वे असत्य या अवास्तविकता अर्थात् अज्ञानता के अन्धकार में डूबे रहते हैं और जन्म और मृत्यु के चक्र में बने रहते हैं।

अथर्ववेद 10.2.15

को अस्मै वासः पर्यदधात्को अस्यायुरकल्पयत् ।
बलं को अस्मै प्रायच्छत्को अस्याकल्पयज्जवम् ॥15॥

(कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्मै) इसको (मनुष्य को) (वासः) इस शरीर में और धरती पर वास (पर्यि) सभी दिशाओं से (अदधात्) दिया (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्य) इसका (आयुः) आयु और स्वास्थ्य (अकल्पयत्) निर्माण किया (बलम्) बल, साहस (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्मै) इसमें (प्रायच्छत्) दिया (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्य) इसको (आकल्पयत्) निर्माण किया (जवम्) गति और प्रगति।

व्याख्या :-

इस गतिशील जीवन के प्रत्येक आयाम को किसने हमें प्रदान किया?
इस मनुष्य को इस शरीर में और धरती पर चारो दिशाओं में किसने आवाज दिया; किसने हमें आयु और स्वास्थ्य दिया; किसने मनुष्यों के लिए बल और साहस दिया; किसने मनुष्य को गति और प्रगति प्रदान की।
इन सब प्रश्न का उत्तर है – सर्वोच्च स्वामी।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हमारे जीवन के सभी आयाम आध्यात्मिक रूप से किस प्रकार लाभकारी हो सकते हैं?
परमात्मा ने हमें यह आवास दिया है अर्थात् जीने के लिए मानव शरीर। इसके साथ ही उसने हमें स्वस्थ और लम्बा जीवन जीने के लिए हर प्रकार का ज्ञान, प्रेरणाएँ और निर्देश भी दिये हैं। इस वर्तमान जीवन के चलते हुए प्रत्येक व्यक्ति को गति और प्रगति के साथ भिन्न-भिन्न कार्य करने के लिए कई प्रकार के बलों और साहस की आवश्यकता होती है।
परमात्मा के इन सभी उपहारों के साथ हमें प्रतिक्षण उस दाता के साथ प्रेमपूर्ण संगति बनाये रखते हुए उसके प्रति चेतन रहना चाहिए, केवल तभी यह समस्त उपहार आध्यात्मिक रूप से और साथ-साथ शारीरिक और मानसिक रूप से भी फलदायक होंगे।

अथर्ववेद 10.2.16

केनापो अन्वतनुत केनाहरकरोदुचे ।
उषसं केनान्वैन्द केन सायंभवं ददे ॥16॥



(केन) कौन (क्यों, कैसे) (आपः) जल (अनु) लगातार (अतनुत) विस्तृत (केन) कौन (क्यों, कैसे) (अहः) दिन और सूर्य (अकरोत्) बनाये (रूचे) चमक के लिए (उषसम्) सूर्योदय से पूर्व का समय (केन) कौन (क्यों, कैसे) (अन्वैन्द्र) लगातार प्रकाशित (केन) कौन (क्यों, कैसे) (सायम् भवम्) सायंकाल का अस्तित्व (ददे) दिया।

व्याख्या :-

किसने जलों का अर्थात् बादलों और समुद्रों का निर्माण किया और उन्हें विस्तृत किया?

किसके द्वारा समय के भिन्न-भिन्न आयाम बनाये गये?

किसके द्वारा लगातार जल अर्थात् बादल और समुद्र विस्तृत किये गये; किसके द्वारा दिन अर्थात् सूर्य चमकने के लिए बनाया गया; किसके द्वारा सूर्योदय से पूर्व की ऊषा को लगातार प्रकाशित किया गया; किसके द्वारा सायंकाल का अस्तित्व दिया गया।

अथर्ववेद 10.2.17

को अस्मिन्नेतो न्य दधातन्तुरा तायतामिति ।
मेधां को अस्मिन्ध्यौहत्को बाणं को नृतो दधौ ॥17॥

(कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्मिन्) इसमें, शरीर (रेतः) जीवन बल का बीज, उत्पत्ति का बीज (नि) लगातार (अदधात्) निवेश किया (तन्तुः) तन्त्र (आतायताम्) विस्तृत (इति) उससे (मेधाम्) बुद्धि (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (अस्मिन्) इसमें (अधि औहत्) लाया और निवेश किया (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (बाणम्) वाणी (कः) कौन, सर्वोच्च स्वामी (नृतः) गति करने और आनन्द में नृत्य करने की शक्ति प्रदान की (दधौ) दिया।

व्याख्या :-

किसने मानव अस्तित्व के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तन्त्र को विस्तृत करने का बीज निवेश किया?

किसने इस (मनुष्य) में जीवनबल का बीज तथा उत्पत्ति का बीज लगातार निवेश किया, जिससे उस तन्त्र का विस्तार किया जा सके; कौन इसमें (मनुष्य में) बुद्धि को लाया और उसका निवेश किया; किसने वाणी दी, गति करने और आनन्द में नृत्य करने की शक्ति प्रदान की।
इसका उत्तर है – सर्वोच्च स्वामी।

जीवन में सार्थकर्ता :-

सृष्टि उत्पत्ति के बाद मानव के अस्तित्व का विस्तार किस प्रकार हुआ?

मानव अस्तित्व का विस्तार मनुष्यों के द्वारा केवल वीर्य शक्ति के माध्यम से शारीरिक और बुद्धि के माध्यम से मानसिक ही नहीं हुआ अपितु आध्यात्मिक रूप से भी आनन्द में नृत्य करने का विस्तार हुआ है अर्थात् सर्वोच्च शक्ति की संगति में जीना जो सभी जीवों में सामान्य है।

इस प्रकार सृष्टि निर्माण के समय से मानव अस्तित्व सभी आयामों में सर्वोच्च स्वामी के द्वारा ही विस्तृत किया गया है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अथर्ववेद 10.2.18

केनेमां भूमिमौर्णोत्केन पर्यभवद्विम् ।
केनाभि महना पर्वतान्केन कर्माणि पुरुषः ॥18॥

(केन) कौन (कैसे, क्यों) (इमाम्) यह (भूमिम्) भूमि (और्णोत्) आच्छादित की गई (केन) कौन (कैसे, क्यों) (परि) सभी दिशाओं से (अभवत्) घेर लिया (दिवम्) आकाश (केन) कौन (कैसे, क्यों) (अभि) निवेश करता है (महना) महिमा के साथ (पर्वतान्) पर्वत और बादल (केन) कौन (कैसे, क्यों) (कर्माणि) कार्य (पुरुषः) मनुष्य ।

व्याख्या :-

किसने प्रकृति के भिन्न-भिन्न अंगों में महिमा स्थापित की है?

कौन सृष्टि के सभी कार्यों को धारण करता है?

किसके द्वारा भूमि का आवरण किया गया है; किसके द्वारा सभी दिशाओं में आकाश घेरे गये हैं; किसके द्वारा पर्वतों और बादलों में महिमा स्थापित की गई है; किसके द्वारा मनुष्यों के और प्रकृति के सभी कार्य धारण किये जाते हैं।

मनुष्यों के लिए यह सब सर्वोच्च स्वामी करता है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हम अपने अहंकार से छुटकारा कैसे पा सकते हैं?

जिस प्रकार परमात्मा ने प्रकृति के भिन्न-भिन्न अंगों में महिमाएँ और अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्रदान की हैं, उसी प्रकार हमारे कार्यों की सभी महिमाएँ भी परमात्मा के द्वारा दी जाती हैं। अतः हमारे व्यक्तिगत अस्तित्व के दावे या अहंकार का कोई प्रश्न ही नहीं हो सकता।

यदि हम सफलतापूर्वक 'ब्रह्म प्रकाशन' अर्थात् परमात्मा की छाप को अपने जीवन में आह्वान करने के योग्य बन सकें तो हर प्रकार के अहंकार की समाप्ति हो जायेगी।

अथर्ववेद 10.2.19

केन पर्जन्यमन्वेति केन सोमं विचक्षणम् ।
केन यज्ञं च श्रद्धां च केनास्मिन्निहितं मनः ॥19॥

(केन) कौन (कैसे, क्यों) (पर्जन्यम्) वर्षा करते हुए बादल (अनु एति) लगातार प्राप्त होते हैं (केन) कौन (कैसे, क्यों) (सोमम्) शुभ लक्षण, दिव्य ज्ञान, औषधियाँ (विचक्षणम्) विशेष रूप से चमकता हुआ (केन) कौन (कैसे, क्यों) (यज्ञम्) त्याग करते हुए (च) और (श्रद्धाम्) विश्वास और भक्ति (च) और (केन) कौन (कैसे, क्यों) (अस्मिन्) इसमें (निहितम्) गहराई से जीवन्त (मनः) मन (ऊपरि चेतना से लेकर निराधार अचेतना तक) ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

किसने हमें सभी पदार्थ और चेतना प्रदान की?

किसके द्वारा लगातार बादल और वर्षा (जलों की और सभी सुखों की) प्राप्त होती है; किसके द्वारा सभी शुभ गुण, दिव्य ज्ञान और औषधियाँ विशेष रूप से चमकती हैं; किसके द्वारा यज्ञ अर्थात् त्यागपूर्ण कार्य, श्रद्धा और भक्ति प्राप्त होती है; किसके द्वारा हमारा मन गहराई से जीवन्त होता है (ऊपरी चेतना से लेकर निराधार अचेतना तक)।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हमें भौतिक संसार और चेतना का किस प्रकार प्रयोग करना चाहिए?

हम भौतिक रूप से या मानसिक रूप से अपने पास जो कुछ भी प्राप्त करते हैं वह सब दिव्य खजाने से प्राप्त होता है। अतः हर वस्तु का समर्पण दिव्य उद्देश्यों के लिए और दिव्य रूप में होना चाहिए।

अथर्ववेद 10.2.20

केन श्रोत्रियमाप्नोति केनेमं परमेष्ठिनम्।
केनेममग्निं पूरुषः केन संवत्सरं ममे।।20।।

(केन) कौन (कैसे, क्यों) (श्रोत्रियम्) सुनने के लिए समर्पित और सक्षम (वेदों को) (आप्नोति) प्राप्त करता है (केन) कौन (कैसे, क्यों) (इमम्) यह (परमेष्ठिनम्) उच्च स्तर पर स्थापित (चेतना के अर्थात् परमात्मा के) (केन) कौन (कैसे, क्यों) (इमम्) यह (अग्निम्) ऊर्जा, अग्नि, सूर्य आदि (पूरुषः) मनुष्य (केन) कौन (कैसे, क्यों) (संवत्सरम्) ब्रह्माण्ड का काल युग (ममे) नापता है, समझता है।

व्याख्या :-

किसके द्वारा मनुष्य शरीर, दिव्य ज्ञान, ऊर्जा तथा ब्रह्माण्ड के कालयुगों को प्राप्त करता है?

मनुष्य किसके द्वारा वेद को सुनने के लिए समर्पण और योग्यता को प्राप्त करते हैं; किसके द्वारा वह सर्वोच्च शक्ति परमात्मा को प्राप्त करता है और चेतना के उच्च स्तर पर स्थापित होता है; किसके द्वारा वह ऊर्जा, अग्नि, सूर्य आदि को प्राप्त करता है; और किसके द्वारा वह ब्रह्माण्ड के कालयुगों को नापता है और उन्हें समझता है।

इन सभी प्रश्नों का स्वाभाविक उत्तर है – सर्वोच्च स्वामी। फिर भी इसका स्पष्ट उत्तर अथर्ववेद 10.2.21 में दिया गया है।

अथर्ववेद 10.2.21

ब्रह्म श्रोत्रियमाप्नोति ब्रह्मेमं परमेष्ठिनम्।
ब्रह्मेममग्निं पूरुषो ब्रह्म संवत्सरं ममे।।21।।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (श्रोत्रियम्) सुनने के लिए समर्पित और सक्षम (वेदों को) (आप्नोति) प्राप्त करता है (ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (इमम्) यह (परमेष्ठिनम्) उच्च स्तर पर स्थापित (चेतना के अर्थात् परमात्मा के) (ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (इमम्) यह (अग्निम्) ऊर्जा, अग्नि, सूर्य आदि (पुरुषः) मनुष्य (ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (संवत्सरम्) ब्रह्माण्ड का काल युग (ममे) नापता है, समझता है।

व्याख्या :-

क्या हम जीवन में सब कुछ ब्रह्मण से प्राप्त करते हैं?

ब्रह्मण अर्थात् सृष्टि के स्वामी के माध्यम से मनुष्य वेद को सुनने के लिए समर्पण और योग्यता को प्राप्त करता है; ब्रह्म के माध्यम से वह सर्वोच्च शक्ति परमात्मा को प्राप्त करता है और चेतना के उच्च स्तर पर स्थापित होता है; ब्रह्म के माध्यम से वह ऊर्जा, अग्नि, सूर्य आदि को प्राप्त करता है; और ब्रह्म के माध्यम से वह ब्रह्माण्ड के कालयुगों को नापता है और उन्हें समझता है।

अथर्ववेद 10.2.22

केन देवाँ अनु क्षियति केन दैवजनीर्विशः।
केनेदमन्यन्नक्षत्रं केन सत्क्षत्रमुच्यते॥22॥

(केन) कौन (कैसे, क्यों) (देवान्) दिव्य (शक्तियाँ और लोग) (अनु क्षियति) लगातार जीते हैं (केन) कौन (कैसे, क्यों) (दैवजनीः) दिव्यताओं से उत्पन्न (विशः) लोग (केन) कौन (कैसे, क्यों) (इदम्) यह (अन्यत्) दूसरे (न क्षत्रम्) अशासन, अनुशासनहीनता और शक्तिहीनता (केन) कौन (कैसे, क्यों) (सत्) सत्य, वास्तविक (क्षत्रम्) नियम, अनुशासन, शक्ति (उच्यते) प्राप्त होती है।

व्याख्या :-

कौन सभी दिव्यताओं, सत्य शासन या अशासन का निर्माता है?

किसके द्वारा मनुष्य लगातार दिव्यताओं में जीते हैं (शक्तियाँ और लोग); किसके द्वारा लोग दिव्यताओं से उत्पन्न होते हैं; किसके द्वारा अशासन, अनुशासनहीनता और शक्तिहीनता जैसी अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं; किसके द्वारा सच्चा शासन, अनुशासन और शक्ति प्राप्त होती है।

अथर्ववेद 10.2.23

ब्रह्म देवाँ अनु क्षियति ब्रह्म दैवजनीर्विशः।
ब्रह्मेदमन्यन्नक्षत्रं ब्रह्म सत्क्षत्रमुच्यते॥23॥



(ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (देवान्) दिव्य (शक्तियाँ और लोग) (अनु क्षियति) लगातार जीते हैं (ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (दैवजनीः) दिव्यताओं से उत्पन्न (विशः) लोग (ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (इदम्) यह (अन्यतः) दूसरे (न क्षत्रम्) अशासन, अनुशासनहीनता और शक्तिहीनता (ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (सत्) सत्य, वास्तविक (क्षत्रम्) नियम, अनुशासन, शक्ति (उच्यते) प्राप्त होती है।

व्याख्या :-

क्या हम सदैव ब्रह्म में ही स्थित हैं?

ब्रह्मण अर्थात् सृष्टि के सर्वोच्च स्वामी के माध्यम से, मनुष्य लगातार दिव्यताओं में जीते हैं (शक्तियाँ और लोग); ब्रह्म के माध्यम से लोग दिव्यताओं से उत्पन्न होते हैं; ब्रह्म के माध्यम से अशासन, अनुशासनहीनता और शक्तिहीनता जैसी अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं; ब्रह्म के माध्यम से सच्चा शासन, अनुशासन और शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

अथर्ववेद 10.2.24

केनेयं भूमिर्विहिता केन द्यौरुत्तरा हिता।
केनेदमूर्ध्वं तिर्यक्चान्तरिक्षं व्यचो हितम्।।24।।

(केन) कौन (कैसे, क्यों) (इयम्) यह (भूमिः) भूमि (नीचे) (विहिता) विशेष रूप से बनाया गया और स्थापित (केन) कौन (कैसे, क्यों) (द्यौः) आकाशीय अन्तरिक्ष (उत्तरा) ऊपर, ऊँचाई पर (हिता) बनाया गया और स्थापित (केन) कौन (कैसे, क्यों) (इदम्) यह (उर्ध्वम्) ऊपर (तिर्यक्) तिरछा (च) और (अन्तरिक्षम्) पृथ्वी और आकाश के बीच का स्थान (व्यचः) विस्तृत (हितम्) बनाया गया और स्थापित।

व्याख्या :-

इस ब्रह्माण्ड के भिन्न-भिन्न भागों का निर्माण किसने किया?

नीचे भूमि को विशेष रूप से किसने बनाया और स्थापित किया गया; किसके द्वारा ऊपर ऊँचाई पर आकाशीय अन्तरिक्ष को बनाया और स्थापित किया गया; किसके द्वारा धरती और आकाश के बीच का स्थान बनाया और स्थापित किया गया और ऊपर तथा तिरछा विस्तृत किया गया।

इन सभी प्रश्नों का उत्तर अगले मन्त्र अथर्ववेद 10.2.25 में दिया गया है।

अथर्ववेद 10.2.25

ब्रह्मणा भूमिर्विहिता ब्रह्म द्यौरुत्तरा हिता।
ब्रह्मेदमूर्ध्वं तिर्यक्चान्तरिक्षं व्यचो हितम्।।25।।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(ब्रह्मणा) ब्रह्मण, सृष्टि के सर्वोच्च स्वामी के द्वारा (भूमिः) भूमि (नीचे) (विहिता) विशेष रूप से बनाया गया और स्थापित (ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (द्यौः) आकाशीय अन्तरिक्ष (उत्तरा) ऊपर, ऊँचाई पर (हिता) बनाया गया और स्थापित (ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (इदम्) यह (उर्ध्वम्) ऊपर (तिर्यक) तिरछा (च) और (अन्तरिक्षम्) पृथ्वी और आकाश के बीच का स्थान (व्यचः) विस्तृत (हितम्) बनाया गया और स्थापित

व्याख्या :-

क्या ब्रह्माण्ड में सब कुछ ब्रह्मण के द्वारा बनाया गया है?
ब्रह्मण, सृष्टि के सर्वोच्च स्वामी के द्वारा नीचे भूमि को विशेष रूप से बनाया और स्थापित किया गया;
ब्रह्मण के द्वारा ऊपर ऊँचाई पर आकाशीय अन्तरिक्ष को बनाया और स्थापित किया गया; ब्रह्मण के द्वारा धरती और आकाश के बीच का स्थान बनाया और स्थापित किया गया और ऊपर तथा तिरछा विस्तृत किया गया।

अथर्ववेद 10.2.26

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हृदयं च यत् ।
मस्तिष्कादूर्ध्वः प्रैरयत्पवमानोऽधि शीर्षतः ।।26।।

(मूर्धानम्) मस्तिष्क को (अस्य) इसका (मनुष्य) (संसीव्य) अन्तरंग बनाना, सी देना (अथर्वा) स्थिर, न हिलने वाला, परमात्मा, योगी (हृदयम्) हृदय को (च) और (यत्) जब (मस्तिष्कात्) मस्तिष्क से (उर्ध्वः) ऊपर (प्रैरयत्) प्रेरणा करता है, पहुँच से बाहर (पवमानः) पवित्र करते हुए (अधि शीर्षतः) ऊपर, शीर्ष पर।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार हमें जोड़कर प्रेरित करता है?
एक योगी कहाँ पर स्थापित होता है?
न हिलने वाला और स्थिर, परमात्मा, जब मस्तिष्क और हृदय के साथ अन्तरंग अर्थात् सम्बद्ध हो जाता है और इनको आपस में सी देता है, वह पवित्र करने वाला परमात्मा हमें ऊपर मस्तिष्क से ही प्रेरित करता है, स्वयं शीर्ष पर अर्थात् मस्तिष्क और हृदय की पहुँच से भी बाहर होता है।
दूसरा अर्थ – न हिलने वाला और स्थिर योगी जब अपने मस्तिष्क और हृदय को परमात्मा के साथ अन्तरंग अर्थात् अंगीकार बना लेता है तो वह पवित्र करने वाला आत्मा बन जाता है जो मस्तिष्क के ऊपर से प्रेरणा करता है और स्वयं शीर्ष पर अर्थात् ब्रह्मरन्ध्र में स्थापित रहता है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति कैसे करें?
हृदय और मन को एकीकृत करने की क्या हानियाँ हैं?
परमात्मा हमारे हृदय और मस्तिष्क को एकीकृत करता है किन्तु स्वयं उनसे ऊपर रहता है। हृदय और मन को परमात्मा के साथ एकीकृत करने का उद्देश्य हमें प्रेरित करना होता है। परन्तु हृदय और

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



मन की एकता हमारे लिए दिशा भ्रमित करने वाली बन सकती है। हृदय और मन की एकता यह भूल जाती है कि उसे परमात्मा से प्रेरणा प्राप्त करने की आवश्यकता है। हृदय अपनी इच्छाओं का निर्माण जारी रखता है और मन उन इच्छाओं को पूरा करने में लगा रहता है और साथ ही अपनी महिमा का अहंकार इकट्ठा करने में लगा रहता है। इस एकता से व्यक्तिगत मन के अहंकार को बल मिलता है जैसे कि यह एक स्वतंत्र सत्ता हो जो आध्यात्मिक अनुभूति के मार्ग पर सबसे बड़ी बाधा बन जाती है।

हम परमात्मा की अनुभूति तब तक नहीं कर सकते जब तक हम अपने व्यक्तिगत अस्तित्व के भाव में जीते रहते हैं। परमात्मा की अनुभूति लम्बी और लगातार ध्यान-साधना वाले जीवन के साथ, परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण और प्रेम के साथ ही सम्भव हो सकती है।

हृदय और मन की एकता का केवल तीसरी दृष्टि अर्थात् परमात्मा के साथ सम्बन्ध बनाने में ही सदुपयोग किया जाना चाहिए जो इस एकता की मूल शक्ति है और किसी भी प्रकार से हमारे अहंकार और इच्छाओं के लिए नहीं है।

इस अनुपातिक सिद्धान्त पर दृढ़ एकाग्रता निश्चित रूप से हमारे मन और हृदय पर ब्रह्मण की स्थाई छाप अर्थात् ब्रह्म प्रकाशन में सहायक सिद्ध होगी।

सूक्ति :- (मूर्धानम् अस्य संसीव्य अथर्वा हृदयम् च – अथर्ववेद 10.2.26) न हिलने वाला और स्थिर, परमात्मा, जब मस्तिष्क और हृदय के साथ अन्तरंग अर्थात् सम्बद्ध हो जाता है और इनको आपस में सी देगा।

अथर्ववेद 10.2.27

तद्वा अथर्वणः शिरो देवकोशः समुब्जितः ।
तत्प्राणो अभि रक्षति शिरो अन्नमथो मनः ।।27।।

(तत्) वह (वै) निश्चित रूप से (अथर्वणः) स्थिर, न हिलने वाला, परमात्मा, योगी (शिरः) सिर (देवकोशः) दिव्यताओं का कोष (समुब्जितः) नियंत्रण में रखता है (तत्) वह (प्राणः) जीवनी शक्ति, श्वास (अभि रक्षति) सब दिशाओं से सुरक्षित करता है (शिरः) सिर (अन्नम्) भोजन (कोष) (अथो) और (मनः) मन।

व्याख्या :-

‘अथर्व’ अर्थात् परमात्मा और योगी की क्या शक्तियाँ हैं?

न हिलने वाला, स्थिर, परमात्मा निश्चित रूप से हृदय और मन को नियंत्रण में रखते हुए, उन पर शासन करते हुए सिर को दिव्यताओं का कोष बना लेता है। जीवनी शक्ति अर्थात् श्वास उसके सिर को, अन्नमय कोष को और मनोमय कोष को चारों तरफ से सुरक्षित करती है।

दूसरा अर्थ – स्थिर योगी अपनी शान्त साम्यावस्था में अपने हृदय और मन को नियंत्रण में रखकर और उन पर शासन करते हुए अपने सिर को दिव्यताओं का कोष बना लेता है। उस योगी की जीवनी शक्ति अर्थात् श्वास उसके सिर को, अन्नमय कोष को और मनोमय कोष को चारों तरफ से सुरक्षित करती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकर्ता :-

हम ब्रह्म प्रकाशन के जीवन्त उदाहरण कैसे बन सकते हैं?

जब एक 'अथर्व' योगी 'अथर्व' परमात्मा के स्तर पर जीवन जीता है तो उसका जीवन ब्रह्म प्रकाशन का जीवन्त उदाहरण बन जाता है। जो इस सूक्त का देवता है और मानव जीवन का प्रमुख लक्ष्य है।

इसलिए हमें अपने मस्तिष्क (हृदय और मन के संयुक्त रूप) को लम्बी और लगातार ध्यान—साधनाओं के द्वारा, हृदय की इच्छाओं और मन के अहंकार को दबाते हुए, परमात्मा की तरफ एकाग्र करना चाहिए।

अथर्ववेद 10.2.28

ऊर्ध्वो नु सृष्टा इतिर्यङ्नु सृष्टाः सर्वा दिशः पुरुष आ बभूवौ३।
पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते॥28॥

(ऊर्ध्वः) ऊपर (नु) निश्चित रूप से (सृष्टाः) सृष्टि का निर्माता (तिर्यङ्) तिरछा (ऊपर के एक सिरे से नीचे के विपरीत सिरे तक) (नु सृष्टाः) निश्चित रूप से सृष्टि का निर्माता (सर्वाः दिशः) सभी दिशाओं में (पुरुषः) सर्वोच्च पुरुष (आ बभूवौ) यथावत् स्थापित (पुरम्) नगरी (परमात्मा की), पूर्णता (यः) जो (ब्रह्मणः) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (वेद) जानता है (यस्याः) जिसके कारण (पुरुषः) सर्वोच्च पुरुष (उच्यते) कहा जाता है।

व्याख्या :-

ब्रह्मण की नगरी कौन सी है?

एक योगी किस प्रकार सूक्ष्म स्तर का ब्रह्मण्डीय पुरुष बन जाता है?

सृष्टि का निर्माता निश्चित रूप से सबसे ऊपर है; सृष्टि का निर्माता निश्चित रूप से तिरछा (ऊपर के एक सिरे से नीचे के विपरीत सिरे तक) है; वह सर्वोच्च पुरुष सभी दिशाओं में स्थापित है।

जो उस ब्रह्मण अर्थात् सृष्टि के उस सर्वोच्च स्वामी को उसकी पूर्णता में जानता है, जिसे ब्रह्मण्डीय पुरुष कहा जाता है और उस योगी को सूक्ष्म स्तर पर ब्रह्मण्डीय पुरुष कहा जाता है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

परमात्मा का दर्शन अपने अन्दर स्थापित करने के लिए परमात्मा के किस एकमात्र लक्षण की अनुभूति प्राप्त करनी चाहिए?

परमात्मा की सर्वत्र विद्यमानता ही एक मात्र ऐसा लक्षण है जिसकी अनुभूति प्राप्त करके एक योगी उस सर्वोच्च पुरुष का दर्शन बन जाता है। परमात्मा की सर्वविद्यमानता केवल स्थान से सम्बन्धित ही नहीं है, अपितु यह सभी कालों, कार्यों और गतियों में भी लागू होती है।

इस मन्त्र के आधार पर मुण्डक उपनिषद् (3.2.9) में कहा गया है 'ब्रह्म विदम् ब्रह्मेव भवित' अर्थात् ब्रह्म को जानने वाला स्वयं ही ब्रह्म ही बन जाता है। इसीलिए ऐसे योगी को सूक्ष्म स्तर पर ब्रह्मण्डीय पुरुष कहा जाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति 1 :- (पुरम् यः ब्रह्मणः वेद यस्याः पुरुषः उच्यते – अथर्ववेद 10.2.28) जो उस ब्रह्मण अर्थात् सृष्टि के उस सर्वोच्च स्वामी को उसकी पूर्णता में जानता है, जिसे ब्रह्मण्डीय पुरुष कहा जाता है और उस योगी को सूक्ष्म स्तर पर ब्रह्मण्डीय पुरुष कहा जाता है।

सूक्ति 2:- ('ब्रह्म विदम् ब्रह्मेव भवित' – मुण्डक उपनिषद् 3.2.9) ब्रह्म को जानने वाला स्वयं ही ब्रह्म ही बन जाता है।

अथर्ववेद 10.2.29

यो वै तां ब्रह्मणो वेदामृतेनावृतां पुरम्।
तस्मै ब्रह्म च ब्राह्माश्च चक्षुः प्राणं प्रजां ददुः॥29॥

(यः) जो (वै) निश्चित रूप से (ताम्) उसको (ब्रह्मणः) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (वेद) जानता है (अमृतेन) न मरने वाले के साथ (मुक्ति का आनन्द) (आवृताम्) आवृत हुआ, व्याप्त हुआ (पुरम्) नगरी, पूर्णता (तस्मै) उसको (मनुष्यों को) (ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (च) और (ब्राह्माः) ब्रह्मण से सम्बन्धित प्रत्येक दिव्य शक्ति (च) और (चक्षुः) दिव्य दृष्टि (प्राणम्) महत्त्वपूर्ण श्वास (जीवनी शक्ति) (प्रजाम्) प्रजा, अनुयायी (लगातार चलने के लिए) (ददुः) देता है।

व्याख्या :-

ब्रह्मण्डीय पुरुष को जानने के बाद योगी को क्या प्राप्त होता है?

जो व्यक्ति निश्चित रूप से उस ब्रह्मण को, सृष्टि के सर्वोच्च स्वामी को जानता है, उसकी नगरी, उसकी पूर्णता को जानता है जो न मरने वाले (मुक्ति के आनन्द) से आवृत है, व्याप्त है, उस (मनुष्य) को ब्रह्मण अर्थात् ब्रह्मण्डीय पुरुष तथा उस ब्रह्मण से सम्बन्धित प्रत्येक दिव्य शक्ति दिव्य दृष्टि, महत्त्वपूर्ण श्वास (जीवनी शक्ति) तथा प्रजा, अनुयायी (लगातार जारी रहने के लिए) प्रदान करते हैं।

जीवन में सार्थकर्ता :-

एक अनुभूति प्राप्त योगी की क्या अवस्था होती है?

ब्रह्मण की सर्वविद्यमानता और न मरने वाले मुक्ति आनन्द को जानने वाला पूर्ण ज्ञान तथा उस परमात्मा की अमृत अवस्था के मंगलानन्द का आनन्द लेता है।

अथर्ववेद 10.2.30

न वै तं चक्षुर्जहाति न प्राणो जरसः पुरा।
पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते॥30॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(न) नहीं (वै) निश्चित रूप से (तम्) उसको (ब्रह्मण्डीय पुरुष के सूक्ष्म रूप को) (चक्षुः) दिव्य दृष्टि (जहाति) त्याग करता (न) नहीं (प्राणः) महत्त्वपूर्ण वायु (जरसः पुरा) पूर्णता से पूर्व (पुरम्) नगरी (परमात्मा की), पूर्णता (यः) जो (ब्रह्मणः) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (वेद) जानता है (यस्याः) जिसके कारण (पुरुषः) सर्वोच्च पुरुष (उच्यते) कहा जाता है।

व्याख्या :-

क्या दिव्य दृष्टि अनाशवान् होती है?

न तो दिव्य दृष्टि और न ही महत्त्वपूर्ण वायु, पूर्णता अर्थात् मुक्ति से पूर्व, उस (ब्रह्मण्डीय पुरुष के सूक्ष्म रूप) का त्याग करती है।

जो उस ब्रह्मण अर्थात् सृष्टि के उस सर्वोच्च स्वामी को उसकी पूर्णता में जानता है, जिसे ब्रह्मण्डीय पुरुष कहा जाता है और उस योगी को सूक्ष्म स्तर पर ब्रह्मण्डीय पुरुष कहा जाता है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

सूक्ष्म स्तर के ब्रह्मण्डीय पुरुष को कैसे महसूस करें और कैसे उसका अनुसरण करें?

एक बार जब दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाती है तो वह अनाशवान् होती है, ऐसे सूक्ष्म स्तर वाले ब्रह्मण्डीय पुरुष का जीवन के निम्न स्तर पर आने का कोई प्रश्न नहीं होता।

उसकी बाहरी आकृति या व्यवहार से उसका आंकलन नहीं किया जा सकता। आत्मिक रूप से उसका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए।

अथर्ववेद 10.2.31

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।

तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ॥31॥

(अष्टा चक्रा) आठ चक्रों, ऊर्जा केन्द्रों वाला (नव द्वारा) नौ द्वारों वाला (देवानाम्) दिव्य शक्तियों और लोगों की (पूरयोध्या) अपराजेय नगरी (तस्याम्) उसमें (नगरी में) (हिरण्ययः) स्वर्ण, अनेकों शक्तियों वाला (कोशः) खजाना (स्वर्गः) आनन्ददायक, भगवान की तरफ ले जाने वाला (ज्योतिः) प्रकाश (आवृतः) आवृत है।

व्याख्या :-

किस प्रकार मानव शरीर अपराजेय अर्थात् अयोध्या है?

दिव्य शक्तियों और लोगों की अभेद्य नगरी (निर्माता और उसकी सृष्टि के सर्वज्ञ रूप का सूक्ष्म संस्करण अर्थात् मानव शरीर) के आठ चक्र अर्थात् ऊर्जा केन्द्र हैं और नौ द्वार (बाहर जाने के) हैं। यह स्वर्णिम खजाना अपनी बहुआयामी शक्तियों के साथ मुक्ति के आनन्द से भरा हुआ है और उसे परमात्मा की तरफ ले जाता है। यह प्रकाश अर्थात् ब्रह्म के ज्ञान के प्रकाश से आवृत है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

आठ चक्रों और बाहर जाने के नौ द्वारों का क्या महत्त्व है?

इस मानव शरीर पर किसे शासन करना चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



यह मन्त्र हमें आठ चक्रों अर्थात् ऊर्जा के केन्द्रों पर प्रत्येक की महत्त्वपूर्णता पर ध्यान लगाने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार एक-एक कदम अपनी चेतना को ऊपर उठाकर हम ब्रह्मरन्ध्र के उच्च स्तर तक ले जा सकते हैं। इस अभ्यास के साथ हम परमात्मा की अनुभूति की उच्च चेतना पर जीने के योग्य बन सकते हैं।

इसी प्रकार बाहर निकलने के नौ द्वारों पर ध्यान लगाकर और उन द्वारों पर नियंत्रण करके हम अपने जीवन को ऊँचा उठा सकते हैं। ये द्वार हैं – दो कान, दो आंखें, दो नासिकाएं, एक मुख, मलद्वार, मूत्रेन्द्रिय।

एक सामान्य मनुष्य भौतिक आनन्द के लिए इन द्वारों का प्रयोग करता है, जबकि एक योगी इन द्वारों का सदुपयोग दिव्य विचारों और भोजन को प्राप्त करने के लिए करता है और इन्द्रियों की मांगों को दबाने के लिए करता है। सामान्यतः, मृत्यु के समय, सामान्य मानवों में हमारा कारण शरीर अर्थात् जीवात्मा मुख से बहिर्गमन करता है। लेकिन सच्चे योगी की जीवात्मा ब्रह्मरन्ध्र से बहिर्गमन करता है। इस प्रकार इन चक्रों पर नियंत्रण और उन पर ध्यान एकाग्र करके हम अपने अन्दर स्वर्णमय और शक्तिशाली खजाने की उपस्थिति को महसूस कर सकते हैं और उसके द्वारा परमात्मा के प्रकाश को महसूस कर सकते हैं।

हमें इस मानव शरीर को ध्यान-साधनाओं और तपस्याओं से अपराजेय बनाना चाहिए जिससे शत्रु या दिव्यता से हीन शक्तियाँ इस पर विजय प्राप्त न सकें, सर्वविद्यमान शक्ति, परमात्मा को ही इस शरीर पर शासन करना चाहिए अर्थात् इस अयोध्या नगरी का राजा राम को ही होना चाहिए।

सूक्ति :- सम्पूर्ण मंत्र।

अथर्ववेद 10.2.32

तस्मिन्हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते।
तस्मिन्यद्यक्षमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदो विदुः॥३२॥

(तस्मिन्) उसका (हिरण्ययः) स्वर्णमय, बहुआयामी शक्तियों वाला (कोशे) कोष, खजाना (त्र्यरे) तीव्रमय गति करता हुआ (त्रि प्रतिष्ठिते) तीन स्थापित हैं (तस्मिन्) उसमें (यत्) जो (यक्षम्) पूजा के योग्य दिव्य अस्तित्व (आत्मन् वत्) आत्मा की तरह, सर्वोच्च शक्ति की तरह (तत् वै) उसको निश्चित रूप से (ब्रह्म विदः) ब्रह्मण के ज्ञान को जानने वाला (विदुः) जानता है।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति के तीन माध्यम क्या हैं?

परमात्मा की अनुभूति के तीन मार्ग कहाँ पर स्थापित होते हैं?

तीन (परमात्मा की अनुभूति के माध्यम अर्थात् दिव्य ज्ञान, निःस्वार्थ कर्म तथा पूजा उपासना) तीन गतिशील और परिवर्तनशील लक्षणों में स्थापित होते हैं (सत्त्व अर्थात् शुद्धता, रजस अर्थात् गतिशीलता और तमस अर्थात् अन्धकार)। जो उच्च स्वर्णमय कोष में हैं अर्थात् अत्यन्त मूल्यवान के पास बहुआयामी शक्तियाँ हैं।

उसमें (स्वर्णमय कोष) में स्थापित है आत्मा अर्थात् सर्वोच्च शक्ति जो पूजा के योग्य दिव्य शक्ति है। ब्रह्मण के ज्ञान को जानने वाला निश्चित रूप से उसको जानता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकर्ता :-

एक योगी शान्त साम्य अवस्था कैसे प्राप्त करता है?

प्रत्येक मनुष्य इन तीन में से किसी एक कार्य में अवश्य ही लगा हुआ है, दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिए और कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करने के लिए भिन्न-भिन्न कर्मों में।

हम इस ब्रह्माण्ड में जी रहे हैं जिसकी अपने तीन विशेष गुण हैं – सात्विक, राजसिक और तामसिक। यह सभी गुण प्रतिक्षण और प्रत्येक स्थान पर इकट्ठे उपस्थित होते हैं जिनमें एक का अधिक प्रभाव होता है। जब उसके सभी कार्य अहंकार और इच्छाओं से रहित हो जाते हैं तो वह इस त्रिगुणात्मक संसार से ऊपर उठ जाता है और शान्त साम्य अवस्था बना लेता है। इसके बाद वह ब्रह्मण को जानने के योग्य बनता है।

सूक्ति :- (तत् वै ब्रह्म विदः विदुः – अथर्ववेद 10.2.32) ब्रह्मण के ज्ञान को जानने वाला निश्चित रूप से उसको जानता है।

अथर्ववेद 10.2.33

प्रभ्राजमानां हरिणीं यशसा संपरीवृताम्।
पुरं हिरण्ययीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम्॥33॥

(प्रभ्राजमानाम्) प्रकाशवान् (ब्रह्म के ज्ञान का प्रकाश) (हरिणीम्) दुःखों का नाशक (यशसा) महिमाओं के साथ (संपरीवृताम्) लिपटा हुआ (पुरम्) नगरी, पूर्णता (हिरण्ययीम्) स्वर्णमय, बहुआयामी शक्तियों वाला (ब्रह्म) ब्रह्मण, सृष्टि का सर्वोच्च स्वामी (अविवेश) चारों दिशाओं से प्रवेश करता है (अपराजिताम्) अपराजेय, न दबने वाला।

व्याख्या :-

महिमावान् मनुष्यों के जीवन में ब्रह्मण किस प्रकार दृश्यमान होते हैं?

वह ब्रह्मण प्रकाशवान् है (ज्ञान का प्रकाश है), सभी दुःखों का नाशक है और असंख्य महिमाओं में लिपटा हुआ है।

ऐसी स्वर्णिम और शक्तिशाली नगरी में अर्थात् दिव्य मनुष्यों के जीवन में वह अपराजेय, न दबने वाला ब्रह्मण चारों दिशाओं से प्रवेश करता है।

अथर्ववेद 10.7.35

स्कम्भो दाधार द्यावापृथिवी उभे इमे स्कम्भो दाधारोर्वन्तरिक्षम्।
स्कम्भो दाधार प्रदिशः षडुर्वीः स्कम्भ इदं विश्वं भुवनमा विवेश॥35॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(स्कम्भः) समर्थन स्तम्भ, सबका आधार, ब्रह्माण्ड को समर्थन देने वाला, परमात्मा (दाधार) धारण करता है, पोषण करता है (पृथिवीम्) भूमि को (उत) और (द्याम्) स्वर्गलोक को (स्कम्भः) समर्थन स्तम्भ, सबका आधार, ब्रह्माण्ड को समर्थन देने वाला, परमात्मा (दाधार) धारण करता है, पोषण करता है (उरु) विशाल, व्यापक (अन्तरिक्षम्) सूर्य और धरती के बीच आकाश का स्थान (स्कम्भः) समर्थन स्तम्भ, सबका आधार, ब्रह्माण्ड को समर्थन देने वाला, परमात्मा (दाधार) धारण करता है, पोषण करता है (प्रदिशः) मुख्य दिशाएँ (षत्) छः (उर्वीः) विशाल, व्यापक (स्कम्भे) उस समर्थन स्तम्भ में, सबके आधार में, ब्रह्माण्ड के समर्थन में, परमात्मा में (विश्वम्) सभी (भुवनम्) अस्तित्वमय संसार (आ विवेश) प्रवेश करता है, स्थापित है।

नोटः— अथर्ववेद 4.11.1 तथा अथर्ववेद 10.7.35 मूलतः समान हैं। अथर्ववेद 4.11.1 में देवता है 'अनड्वान्' अर्थात् बैल, ब्रह्माण्ड नामक गाड़ी को खींचने वाली शक्ति, समूचे ब्रह्माण्ड का भार वहन करने वाला, परमात्मा। अथर्ववेद 10.7.35 में देवता है 'स्कम्भ' अर्थात् समर्थन स्तम्भ, सबका आधार, ब्रह्माण्ड को समर्थन देने वाला, परमात्मा। इस प्रकार दोनों मन्त्र अलग-अलग शब्दों में परमात्मा को इस सारी सृष्टि का अकेला पोषक, धारण करने वाला और समर्थन देने वाला सिद्ध करते हैं।

व्याख्याः—

इस सृष्टि को कौन धारण करता है और पोषण करता है?

यह सृष्टि किसमें स्थापित है?

स्कम्भः, समर्थन स्तम्भ, सबका आधार, ब्रह्माण्ड को समर्थन देने वाला, परमात्मा, धरती और स्वर्ग दोनों को धारण और पोषण करते हैं। स्कम्भः, समर्थन स्तम्भ, सबका आधार, ब्रह्माण्ड को समर्थन देने वाला, परमात्मा, धरती और सूर्य के बीच के विशाल और व्यापक आकाशीय स्थान को धारण और पोषण करते हैं। स्कम्भः, समर्थन स्तम्भ, सबका आधार, ब्रह्माण्ड को समर्थन देने वाला, परमात्मा, विशाल और व्यापक छः मुख्य दिशाओं — पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर और नीचे, सबको धारण और पोषण करते हैं। उस स्कम्भः में, समर्थन स्तम्भ, सबका आधार, ब्रह्माण्ड को समर्थन देने वाला, परमात्मा में समूचा अस्तित्वमय संसार प्रवेश करता है और स्थापित होता है।

जीवन में सार्थकताः—

परमात्मा के 'योगानुशासनम्' की अनुभूति किस प्रकार करें?

अपने निर्माताओं और वृद्धजनों के अनुशासन की अनुभूति किस प्रकार करें?

परमात्मा ने इस सृष्टि का निर्माण किया। वह स्वाभाविक कारण से इस संसार को धारण और इसका पोषण करता है, क्योंकि यह सारा ब्रह्माण्ड उसी की अभिव्यक्ति है और उसी में स्थापित है। यह सब जीवों के समुचित पोषण के लिए है।

अतः, आध्यात्मिक रूप से हमें सदैव सुरक्षित महसूस करना चाहिए, क्योंकि हम उसी में स्थापित हैं। हम उसकी वास्तविकता से उसकी शक्तियों और उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर नहीं रह सकते। यह विश्वास और एहसास हमें उसकी संगति और अनुशासन अर्थात् 'योगानुशासनम्', उसकी एकता के अनुशासन या उसके अनुशासन के साथ एकता के साथ जोड़े रखे।

हमें यही अनुपातिक सिद्धान्त अपने वृद्धजनों और निर्माताओं के साथ महसूस करना चाहिए और अनुसरण, चाहे वे हमारे माता-पिता हों, अध्यापक हों, वृद्धजन हों या किसी भी क्षेत्र में हमारा नेतृत्व

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



करने वाले हों। वे सभी हमें धारण करते हैं और हमारा पोषण करते हैं। हमें सदैव उनके साथ एकता महसूस करनी चाहिए और उनके अनुशासन में स्थापित रहना चाहिए।

अथर्ववेद 10.8.23

सनातन ऐनम आहुः उत अद्य स्यात् पुनर्नवाः।
अहो रात्रे प्रजायेते अन्यः अन्यस्य रूपयोः॥

(सनातन) शाश्वत, प्रतिक्षण नया (ऐनम) इसको (आत्मन्, परमात्मा) (आहुः) कहते हैं (उत) और (अद्य) आज (स्यात्) बन जाता है (पुनर्नवाः) बार-बार नया (नये-नये रूपों में अभिव्यक्त करके) (अहो रात्रे) दिन और रात (प्रजायेते) निर्मित किया (अन्यः अन्यस्य) एक में से अन्य का (रूपयोः) रूप में से।

व्याख्या :-

शाश्वत अर्थात् सनातन कौन है?

उस (आत्मन्) परमात्मा को शाश्वत अर्थात् सनातन कहते हैं और वह आज, वर्तमान में पुनः नया बन जाता है। (नये रूपों में अभिव्यक्त करके), जिस प्रकार दिन और रात्रि एक रूप में से दूसरे का निर्माण हो जाता है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

परमात्मा सनातन अर्थात् शाश्वत किस प्रकार है?

जिस प्रकार दिन और रात्रि का कोई आरम्भ या अन्त नहीं होता क्योंकि प्रत्येक दिन रात्रि में से बनता है और प्रत्येक रात्रि दिन में से आती है, किन्तु दिन और रात्रि के इस चक्र का आरम्भ सूर्य के निर्माण से जुड़ा हुआ है। जो स्वयं परमात्मा द्वारा निर्मित है। इसका अभिप्राय है, हर वस्तु का निर्माता होने के नाते, परमात्मा इस सारी सृष्टि से पूर्व भी विद्यमान था। इसलिए परमात्मा सनातन है।

सनातन का अर्थ शाश्वत, जिसका न कोई आरम्भ और न कोई अन्त। सनातन का एक और अर्थ है कि प्रतिक्षण नये रूपों में स्वयं को अभिव्यक्त करने वाला, प्रतिक्षण असंख्य रूपों में प्रगट होने वाला। इसका अर्थ यह निकलता है कि प्रत्येक वस्तु और जीव का अभिन्न अंग होने के नाते परमात्मा की सनातन प्रकृति प्रत्येक वस्तु और जीव में अभिव्यक्त होती है। कुछ भी और कोई भी उस सनातन से अछूता नहीं हो सकता।

कुछ लोगों का समूह, किसी भी नाम या स्तर से सनातन होने का दावा नहीं कर सकता जिसमें से अन्य सामाजिक और धार्मिक वर्गों को अलग रखा गया हो। इसी प्रकार कोई भी वर्ग सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा की सनातन प्रकृति को अपनाने से इन्कार नहीं कर सकता। यहाँ तक कि एक नास्तिक व्यक्ति भी सनातन को अपनाने से इन्कार नहीं कर सकता, क्योंकि वह भी श्वास लेता है और प्रतिक्षण नये जीवन को प्राप्त करता है और प्रतिक्षण नई अभिव्यक्ति ही सनातन है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



This file is incomplete/under construction

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171